ISSN No. : 2395-4000

संयुक्तांक

प्रयाग-पथ

वर्ष 1, अंक 2-3, फरवरी-जुलाई 2015

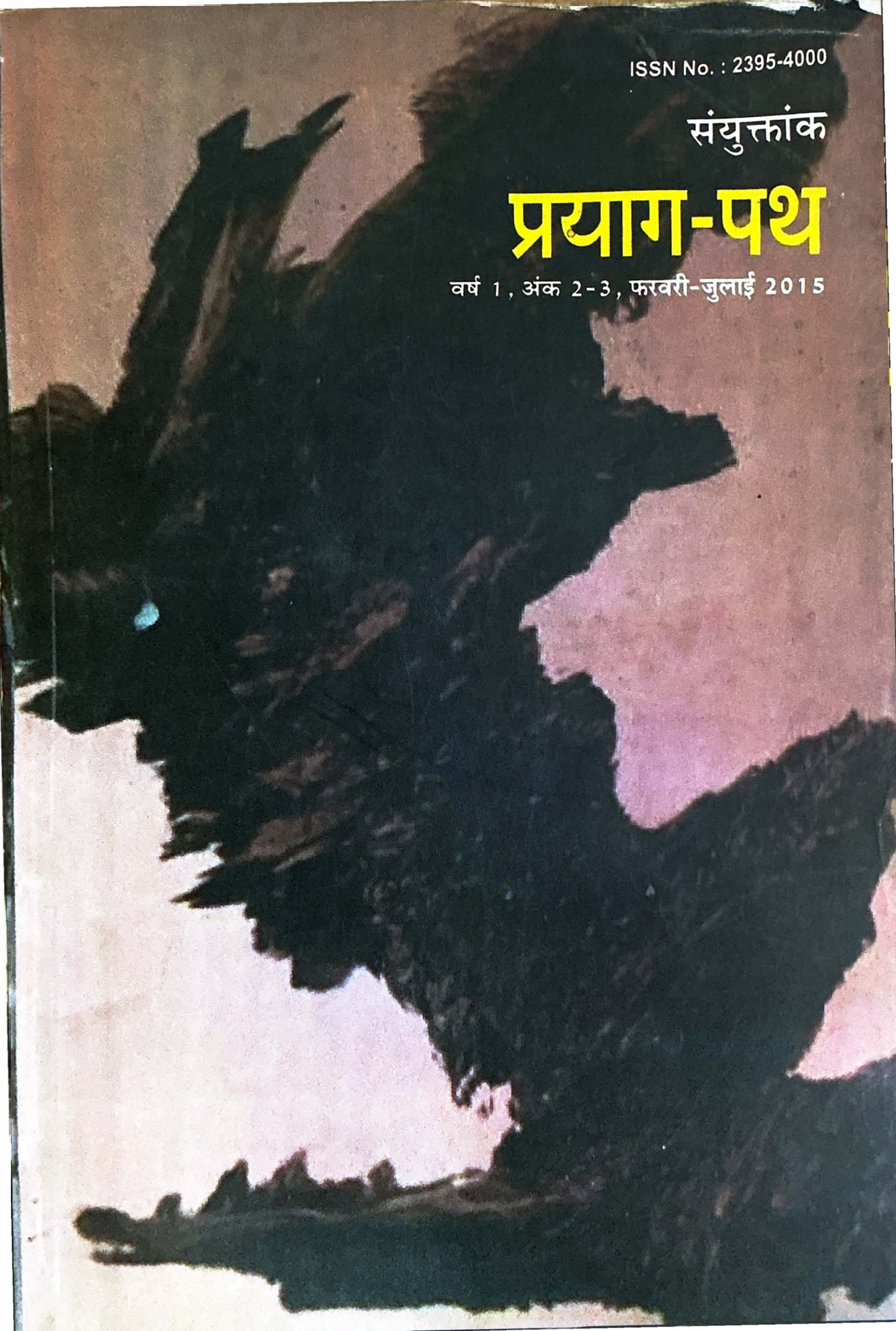

प्रयाग-पथ

साहित्य, कला और संस्कृति की पत्रिका

सम्पादक
हितेश कुमार सिंह

प्रयाग-पथ

साहित्य, कला और संस्कृति की पत्रिका

वर्ष : 1, अंक : 2-3, फरवरी-जुलाई-2015 (संयुक्तांक)

- **सम्पादक :** हितेश कुमार सिंह
- **लेज़र टाइपसेटिंग :** ज़िया कम्प्यूटर्स, 3/11, समीर प्लाजा, पुराना कटरा, इलाहाबाद
- **मुद्रक :** इण्डियन प्रेस प्रा.लि., 36, पन्नालाल रोड, इलाहाबाद-211002

- **मूल्य :**

  एक प्रति : रु. 50.00 (सा.डाक), रु. 70.00 (रजि. डाक)
  संस्थाओं के लिए : रु. 60.00 (सा. डाक), रु. 80.00 (रजि. डाक)
  सदस्यता चार अंक : 300.00 (डाक खर्च सहित)
  आजीवन सदस्यता : पाँच हजार रुपये
  संस्थाओं के लिए : दस हजार रुपये

- **सम्पर्क :**

1546, किदवई नगर,
अल्लापुर, इलाहाबाद-211006
उत्तर प्रदेश
मोबाइल : 09452790210
ई-मेल : prayagpathpatrika@gmail.com

- सम्पादन, प्रकाशन एवं संचालन पूर्णतः अवैतनिक/अव्यवसायिक
- प्रयाग-पथ में प्रकांशित सामग्री के विचार सम्बन्धित लेखकों के अपने हैं, सम्पादक अथवा प्रकाशक का उससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
- समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश होगा।
- स्वामी-सम्पादक-प्रकाशक-मुद्रक हितेश कुमार सिंह द्वारा 1546, किदवई नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश से प्रकाशित और इण्डियन प्रेस प्रा.लि., 36, पन्नालाल रोड, इलाहाबाद-211002 से मुद्रित

आवरण चित्र : विजेन्द्र

अनुक्रम

दो कवि

1. विजेन्द्र जी की दर्द भरी सत्रह कविताएँ और एक पत्र — 7
2. मदन कश्यप की दस कविताएँ — 24

व्यंग्य कथाएँ

3. दस व्यंग्य कथाएँ - विष्णु नागर — 33

एक ऐतिहासिक अनशन

4. तिरसठ दिन लम्बी मौत का हलफनामा - सुधीर विद्यार्थी — 41

कहानियाँ

5. निरा निरर्थक दिन - ममता कालिया — 68
6. जिद हो तो ऐसी - हरियश राय — 72
7. बास्टर्ड - नरेन्द्र सैनी — 81
8. हुए तुम दोस्त जिसके - हुस्न तबस्सुम निहाँ — 87

उपन्यास अंश

9. रपटीला राजपथ - इंदिरा दाँगी — 90

सिनेमा और नाटक

10. बोल्शेविक क्रांति के दर्पण : सर्गेई एम. आइंसेंस्टिन - जवरीमल्लपारख — 96
11. पृथ्वी थियेटर - जनार्दन — 113

आलोचना

12. छायावाद युगीन साहित्यिक पत्रिकाएँ - कुमार वीरेन्द्र — 118
13. सामाजिक बदलाव और साहित्य - संतोष कुमार चतुर्वेदी — 136
14. प्रसाद की कहानी - 'गुण्डा' - श्रीराम त्रिपाठी — 141
15. एक दोहे में निबद्ध सन्त कवि का सुचिन्तित आर्थिक-राजनीतिक दर्शन - सवाई सिंह शेखावत — 145
16. प्रेमचन्द : प्रसाद - भारत यायावर — 148
17. जन्म भूमि ममपुरी सुहावनि - अमीर चन्द वैश्य — 156
18. तेलंगाना का युग पुरुष कोमरम भीम - एन.आर. श्याम — 163

कुछ और कविताएँ एवं ग़ज़ल

19. शैलेन्द्र कपिल — 167
20. निर्मला तोदी — 168
21. वीरेन्द्र कुमार सिंह — 170
22. लता ओझा — 172
23. डॉ0 विदुला दिलीप — 172

विनम्र निवेदन

- 'प्रयाग-पथ' कुछ रचनाकार साथियों के व्यक्तिगत आर्थिक सहयोग से प्रकाशित की जा रही है। अतः इस पत्रिका को खरीदकर पढ़ें एवं हमारा सहयोग करें।
  'प्रयाग-पथ' की प्रति मँगाने के लिए 'प्रयाग-पथ' के बैंक खाते में धनराशि जमाकर फोन से सूचित करें। बैंक खाता का विवरण इस प्रकार है-
  खाता नं0 35210200000234
  शाखा - बैंक ऑफ़ बड़ौदा, जॉर्ज टाउन, शाखा इलाहाबाद-211002, उत्तर प्रदेश
  शाखा क्रमांक - 3521, IFS Code : BARBOGEORGE
  'प्रयाग-पथ' की सदस्यता, विज्ञापन एवं बिक्री से सम्बन्धित समस्त भुगतान 'प्रयाग-पथ' के नाम से करें।
- 'प्रयाग-पथ' की प्रति डाक से प्राप्त करने के लिए प्रति के मूल्य के साथ रजिस्टर्ड बुक पोस्ट की धनराशि भी साथ जोड़कर भेजें।
- रचनाकार साथी सम्पादक से सम्पर्क करने के बाद ही अपनी रचनाएँ प्रकाशनार्थ प्रेषित करें।
- अपनी रचना Kruti Dev 010 या Unicode फाण्ट (16 प्वाइंट) में टाइप कराकर एक सामान्य फाइल में ई-मेल करें-prayagpathpatrika@gmail.com
- प्रकाशक समीक्षा के लिए अपनी श्रेष्ठ पुस्तकें ही प्रेषित करें।
- समीक्षा हेतु पुस्तकों का चयन सम्पादक द्वारा ही होगा।
- 'प्रयाग-पथ' की आजीवन सदस्यता लेकर अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करें।
- एक विज्ञापन देकर भी आप हमारे इस मिशन को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

●

सम्पादक की ओर से

हमारे भारतीय समाज की स्थिति बड़ी दुःखद है क्योंकि हम अपनी आज़ादी के मूल्य को शनैः-शनैः भूलते जा रहे हैं। आज आज़ादी का मतलब सिर्फ 15 अगस्त, 26 जनवरी इत्यादि राष्ट्रीय पर्वों पर देश भक्ति फ़िल्मी गीतों को बजाना एवं गलत रास्ते से कमाये हुए धन से मिठाईयाँ एवं मेवे को अपनी टी.आर.पी. बढ़ाने के लिए बँटवाना तक ही सीमित रह गया है। शायद यही कारण है कि हम स्वतंत्र भारत में रहकर भी वास्तविक तौर पर अपने को स्वतंत्र महसूस नहीं कर पा रहे हैं। समाचार-पत्रों में समाज में घटित घटनाओं को पढ़कर मन बहुत व्यथित होता है और यह सोचता है कि क्या इसी दिन के लिए देशभक्तों ने देश को आज़ादी दिलाने के लिए हँसते-हँसते फाँसी पर झूले थे।

आज युवाओं को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए, उन्हें अपना आदर्श बनाना चाहिए लेकिन वे अपने लिए आदर्श के रूप में ऐसे लोगों का चयन कर रहे हैं जो रिमोट-युग में जी रहे हैं। उनमें रिमोट की तरह कोई भी पद प्राप्त करने की जबर्दस्त होड़ है। वह येन-केन-प्रकारेण तत्काल अपना जीवन बदलना चाहते हैं। इस चिन्ताजनक समय में जिस पर थोड़ा बहुत भरोसा किया जा सकता है- वह है साहित्य। अतः साहित्यकारों से निवेदन है कि वे कम से कम एक ऐसा दीप अवश्य जलायें जो अंधकार होते जा रहे समाज को प्रकाशित कर सके।

'प्रयाग-पथ' के प्रवेशांक को पाठकों का जो अपार स्नेह मिला उसी का प्रतिफल है- हमारा यह दूसरा कदम। यह दूसरा कदम आपकी कसौटियों पर कितना खरा उतरेगा उसके न्यायाधीश आप जैसे सुधी पाठक ही होते हैं, जिसकी हमें प्रतीक्षा रहेगी।

इस बीच विजय मोहन सिंह, तुलसी राम, अवध नारायण मुद्गल, कैलाश वाजपेयी, जितेन्द्र रघुवंशी के निधन से हिन्दी संसार को गहरा आघात पहुँचा। प्रयाग-पथ परिवार भी शोक-संतप्त है। हमारी श्रद्धांजलि।

हितेश कुमार सिंह